कलीसिया अध्याय 48

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट)	*[शान्त समय]* **प्रकाशितवाक्य 19-22**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स से *पढ़ें*) कि अपने दिये गये अनुच्छेद (प्रकाशितवाक्य 19-22) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट)	*[यूहन्ना में प्रमुख पद]* **यूहन्ना में प्रमुख पद का पुनरावलोकन करें**

यूहन्ना की पुस्तक से याद करे गये 5 अंतिम पदो में से दो की समीक्षा करें।

(16) यूहन्ना 16:8। ''वह आकर संसार को पाप और धार्मिक्ता और न्याय के विषय मे निरुत्तर करेगा।''

(17) यूहन्ना 16:13। ''लेकिन जब सत्य का आत्मा आएगा तो तुम्हे सत्य का मार्ग दिखायेगा। वह अपनी ओर से नही कहेगा परंतु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा और आने वाली बाते तुम्हे बतायेगा।''

(18) यूहन्ना 16:14। ''वह मेरी महिमा करेगा क्योकी वह मेरी बातो मे से लेकर तुम्हे बतायेगा।''

(19) यूहन्ना 17:15। ''मैं यह विनती नहीं करता कि तू उन्हें जगत से उठा ले परंतु यह कि तू उन्हे दुष्ट से बचाये रख।''

(20) यूहन्ना 18:36। ''यीशु ने कहा: मेरा राज्य इस दुनिया का नहीं है। अगर ऐसा होता तो मेरे सेवक लड़ते कि मैं यहूदियों के हाथ सौपा न जाता। परंतु मेरा राज्य यहाँ का नही।''

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट)	*[यूहन्ना का सुसमाचार]* **यूहन्ना रचित सुसमाचार का सारांश**

बाइबल में पाई जाने वाली किसी भी पुस्तक के सारांश में निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर होने चाहिए:

- लेखक कौन है, पुस्तक कब और कहाँ लिखी गई और इस पुस्तक का उद्देश्य क्या है?
- पुस्तक को कैसे विभाजित किया जा सकता है और पुस्तक और प्रत्येक अध्याय के लिए उपयुक्त शीर्षक क्या होंगे?
- पुस्तक में सबसे महत्वपूर्ण सैधान्तिक उपसंहार क्या हैं?

- पुस्तक की सबसे महत्वपूर्ण व्यावहारिक सीख क्या हैं?
- हमारे समय और देश के लिए पुस्तक की प्रासंगिकता क्या है?

क. यूहन्ना की पुस्तक का लेखक, दिनांक, स्थान और उद्देश्य ।

1. लेखक, तारीख और सुसमाचार लिखने का स्थान।

लेखक स्वयं को ''शिष्य जिस से यीशु प्रेम रखता था'' कहता है (यूहन्ना 21:20)। यह यूहन्ना प्रेरित था। यीशु के एक शिष्य के रूप में उसने जो सुना और देखा उसे लिखा व गवाही दी थी। कलीसियाई पित्रक इरेनेउस के अनुसार, जो 170 ई.पू में हुए, यहुन्ना रचित सुसमाचार को यहुन्ना द्वारा इफिसुस शहर में लिखा गया, जो आधुनिक तुर्की में है। यूहन्ना रचित सुसमाचार 70 और 98 ई.पू के बीच लिखा गया था, लेकिन हम यह नहीं जानते हैं कि क्या यह पतमोस की सजा से पहले या प्राकाशितवाक्य की पुस्तक से पहले या बाद में लिखा गया था।

2. सुसमाचार लिखने का उद्देश्य।

यूहन्ना के सुसमाचार का उद्देश्य यूहन्ना 20:20-31 में बताया गया है। यूहन्ना कहता हैं कि उसने यह सुसमाचार इसलिए लिखा ताकि उनके पाठकों का लगातार यह विश्वास बना रहे (लगातार वर्तमानकाल) की मसीह ही वह उद्धारकर्ता है जिसकी वे अपेक्षा कर रहे हैं (ग्रीक: क्रिस्टोस) और वह परमेश्वर का पुत्र है और विश्वासी लोगों के रुप में यीशु मसीह के द्वारा अनंत जीवन पाएं क्योकि वह परमेश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्था करता है।

यीशु मसीह अदृश्य परमेश्वर का दृश्य प्रकाशन है (कुलुस्सियों 1:15)। उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है (कुलुस्सियों 2:9)। यीशु मसीह परमेश्वर की महिमा (दिव्य विशेषताओं) और स्वभाव (सार, वास्तविक अस्तित्व, वास्तविकता) के सटीक प्रतिनिधित्व को प्रदर्शित करता है (इब्रानियों 1:3)। यीशु मसीह के पास न केवल शाश्वत और जीवित परमेश्वर का स्वभाव व समानता है, वरन मानव स्वभाव का प्रगटिकरण भी है। उसने उस दुनिया में प्रवेश किया जिसे उसने बनाया और अपने मानव स्वभाव में लोगों का सेवक बन गया (मरकुस 10:45) और अंत में पापियों के लिए अपना बलिदान दे दिया (फिलिप्पियों 2: 5-8)।

यही कारण है कि उन्हें संसार (परमेश्वर का सिंहासन) में सबसे ऊंचे स्थान पर रखा गया था, हर नाम के ऊपर नाम प्राप्त हुआ (यह नाम ''यीशु मसीह ही प्रभु है''1) और यह आशा कि हर घुटना उनके आगे झुकेगा और हर जीभ अंगिकार करेगी कि वही मसीह प्रभु है (फिलिप्पियों 2:9-11) है। यही कारण है कि यूहन्ना कहता हैं कि यीशु मसीह ''परमेश्वर'' है (यहुन्ना 1:1) और उसने मानव रुप में हमारी दुनिया और इतिहास में निवास किया (यूहन्ना 1:14), ताकि अलौकिक, अदृश्य और गहन परमेश्वर को मनुष्यों के सामने

प्रकट कर सके (यूहन्ना 1:18)। यही कारण है कि यीशु मसीह कहते हैं कि वह और पिता एक ही हैं (यूहन्ना 10:30) और जिसने मसीह को देखा है उसने पिता को देखा है (यूहन्ना 14:9-10)।

ख. यूहन्ना रचित सुसमाचार के भाग और शीर्षक

1. यूहन्ना रचित सुसमाचार का शीर्षक।

मैं यूहन्ना के संपूर्ण सुसमाचार को निम्नलिखित शीर्षक देना चाहूंगा:
''यीशु मसीह (मसीहा), परमेश्वर का वचन, परमेश्वर का पुत्र।''

2. यूहन्ना रचित सुसमाचार का विभाजन।

यूहन्ना के सुसमाचार को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है, क्रमश: मसीह की सार्वजनिक और निजी सेवा।

(1) मसीह की सार्वजनिक सेवा।

इसमें यूहन्ना के अध्याय 1-12 शामिल हैं और येरुशलम में दो पर्वो के द्वारा इसे तीन खंडों में विभाजित किया जा सकता है।

- यूहन्ना 1-6 में झोपडियों के पर्व की घट्नाओं का वर्णन है (29 अक्टूबर ई.सन्)(यूहन्ना 7:2)।
- यूहन्ना 7-10 में पर्व के बाद की घटनाओं का वर्णन करते हैं।
- यूहन्ना 10:40 से 12:50 में अर्पण का पर्व के बाद की घटनाओं का वर्णन है (29 दिसंबर) (यहुन्ना 10:22)।

(2) मसीह की निजी सेवा।

इसमें यूहन्ना 13-21 शामिल हैं। यह पृथ्वी पर मसीह के आखिरी सात सप्ताह (30 ई.पू) के दौरान का घटनाक्रम है। इसे चार खंडों में विभाजित किया जा सकता है:

- यूहन्ना 13 में अंतिम भोज का वर्णन है।
- यूहन्ना 14-17 अंतिम भोज में यीशु के वचनों और प्रार्थना का वर्णन करता है।
- यूहन्ना 18-19 में मसीह के पकड़वाये जाने, परीक्षा और क्रूस की मृत्यु दौरान यीशु की पीड़ाओं का वर्णन है।
- यूहन्ना 20-21 में यीशु के पुनरुत्थान पुन: दिखने का वर्णन किया गया है।

ग. यूहन्ना रचित सुसमाचार के सांप्रदायिक विचार

यूहन्ना के सुसमाचार में कई महत्वपूर्ण मसीही सिद्धांत हैं, जैसे:

(1) पिता ने यीशु मसीह को भेजा

(यूहन्ना 3:17,34-35; 4:34; 5:23-24; 6:29,38,39,44; 10:36; 12:44-45; 13:20; 17:3,21,23)। परमेश्वर पिता ने ही उद्धार के काम का *आरंभ* किया।

(2) यीशु मसीह परमेश्वर है

(यूहन्ना 1:1,18; 3:31,34-35; 5:17-23; 6:46; 8:19,23,24,58; 10:30; 12:44-45; 13:3,20; 14:7,9,10; 15:23; 17:2,24; 20:28)।
परमेश्वर पुत्र उद्धार देने का *गुण* रखता हैं।

(3) पवित्र आत्मा पृथ्वी पर मसीह का अधिवक्ता (प्रतिनिधि) है

(यूहन्ना 7:37-39; 14:16,17,26; 15:26; 16:13-15)। परमेश्वर आत्मा उद्धार को *लागू* करता है।

(4) पुर्नजन्म परमेश्वर का विशेषाधिकार है और उद्धार के लिए प्रथम शर्त है

(यूहन्ना 1:13; 3:3-8; 6:44,65; 12:32)।

(5) विश्वास मनुष्य की जिम्मेदारी है और उद्धार के लिए दूसरी शर्त है

(यूहन्ना 1:12; 3:16,18,36; 5:24; 6:28-29,35,40; 7:38-39; 8:24; 12:36,44; 14:1; 20:29,31)।

(6) उद्धार एक नए जीवन में व्यक्त किया जाता है।

विश्वास (यूहन्ना 3:16), प्रेम (यूहन्ना 13:34-35), आशा (यूहन्ना 14:1-3) और आज्ञाकारिता (यूहन्ना 14:21,23) में व्यक्त किया गया है।

(7) चमत्कारों को ''चिन्ह'' कहते हैं, क्योंकि वें उद्धार की आत्मिक वास्तविकताओं की ओर इशारा करते हैं।

रोटियों का चमत्कार (यूहन्ना 6:1-15) एक चिन्ह है कि यीशु मसीह ''जीवन की रोटी'' है (यूहन्ना 6:35)। मृतकों में से लाजर का पुनरुत्थान (यूहन्ना 11:38-47) एक चिन्ह है कि यीशु मसीह ''पुनरुत्थान और जीवन'' है (यूहन्ना 11:25-26)। चमत्कारी चिन्हों का उद्देश्य यीशु मसीह में विश्वास को जगाना और मजबूत करना था (यूहन्ना 12:37; 20:30-31)।
इस पाठ में हम खुद को एक सिद्धांत के निष्कर्ष तक सीमित रखेंगे: यीशु मसीह के परमेश्वर रुप के बारे में शिक्षा। यूहन्ना प्रेरित इस तथ्य पर बल देता है कि यीशु मसीह दिव्य है और परमेश्वर पिता के साथ हमेशा के लिए अस्तित्व में है, कि उसने वास्तव में अपने अवतार में मानव स्वभाव को ग्रहण किया और उसने इसे फिर से अलग नहीं किया। यीशु मसीह के पास अब हमेशा के लिए एक दिव्य और एक मानवीय स्वभाव है! विस्तार से देखें, 8वे भाग, में ''परमेश्वर का स्वभाव और परमेश्व के पुत्र का स्वभाव।''

1. यीशु मसीह परमेश्वर का वचन है।

संवाद में, एक शब्द किसी विचार को अभिव्यक्ति देता है और इस विचार को दूसरों के समक्ष प्रगट करता है। इसी तरह, यूहन्ना 1:1 में, यीशु मसीह को वचन (ग्रीक: लोगोस) कहा जाता है, क्योंकि वह परमेश्वर

के आंतरिक विचार या मन या आत्मा की अभिव्यक्ति है और क्योंकि वह परमेश्वर को मनुष्य के समक्ष प्रगट करता है। यीशु मसीह अदृश्य परमेश्वर की दृश्य अभिव्यक्ति है (कुलुस्सियों 1:15) और इस प्रकार हमारे सीमित मानव शब्दों और अस्तित्व में सर्वशक्तिमान और गौरवमय परमेश्वर को प्रकट करता है। केवल यीशु मसीह परमेश्वर के साथ उपस्थित थे (यूहन्ना 1:1) यह देखने के लिए कि परमेश्वर पिता क्या करते हैं (यूहन्ना 5:19), क्या कहते हैं (यूहन्ना 7:16; 8:28; 12:49-50; 14:10,24) ताकि उनके विचारों व योजनायों को जानें (यूहन्ना 7:29; 8:14,54-55; 10:15; 17:25), और वह सब कुछ परमेश्वर से प्राप्त करने के लिए जो उन्होने अपने चेलों को दिया (यूहन्ना 17:7) और वह बोलने के लिए जो परमेश्वर ने बोलना सिखाया (यूहन्ना 8:38)। यीशु मसीह ने परमेश्वर और परमेश्वर की योजना के बारे में हमें जो कुछ भी जानना चाहिए, वह सब कुछ हमारे सामने प्रकट किया। परमेश्वर के कई भविष्यद्वक्ता हैं (जो परमेश्वर के बारे में बोलते और परमेश्वर की ओर संकेत करते हैं), परन्तु केवल एक (यीशु मसीह) परमेश्वर का शब्द है (जो परमेश्वर को साक्षात् रूप से प्रकट करता है)! यीशु मसीह परमेश्वर का एकमात्र वचन है और लोगों लिए परमेश्वर का अंतिम वचन भी है (इब्रानियों 1:1-2)! मानवीय इतिहास में वह ही केवल एकमात्र प्रगटीकरण (शब्द अध्यन, व्याख्यान) है परमेश्वर के स्वभाव (उसके होने का), वचन और कार्यो का (यहुन्ना 1:18)। यीशु मसीह से पहले केवल भविष्यद्वक्ता थे और यीशु मसीह के बाद केवल प्रेरित हुए, लेकिन यीशु मसीह के अलावा कोई अन्य परमेश्वरिय प्रकाशन मौजूद नहीं है!

2. यीशु मसीह परमेश्वर के पुत्र हैं।

परमेश्वर का पुत्र शब्दसिद्धान्त एक सामान्य भ्रम का उल्लेख नहीं करता है कि यीशु परमेश्वर का शारीरिक पुत्र है। वरन यह विचार व्यक्त करता है कि अथाह, अदृश्य और अपहुँच परमेश्वर ने स्वयं मानव स्वभाव अपना लिया और यीशु मसीह के माध्यम से मानव सृष्टि और इतिहास में प्रवेश किया।
बाइबल ''पुत्र'' के चार प्रकारो के बारे में बताती है: शारीरिक पुत्र, आत्मिक पुत्र, प्रतीकात्मक पुत्र और एकलौता पुत्र है। संपूर्ण शिक्षण के लिए मैनुअल 2, भाग 8 (परमेश्वर की प्रकृति और परमेश्वर का बेटा) देखें।

3. यीशु मसीह में जीवन है।

यूहन्ना 5:26 में, यीशु कहता है, ''क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप मे जीवन रखता है, उसी रीति से उसने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखे।'' यह मसीह की अलौकिक, दार्शनिक, त्रिएकत्व और अनन्त पुत्रता का भी वर्णन करता है। मनुष्य और अन्य सभी रचित प्राणी इस ''स्वयं-जीवन'' के अधिकारी नहीं हैं, क्योंकि वे *रचे गये* हैं और अपने सृष्टिकर्ता से अपना जीवन प्राप्त करते हैं। लेकिन परमेश्वर और मसीह के पास यह ''स्वयं-जीवन'' है।

परमेश्वर पिता के अलावा और कोई नहीं है, जिसके पास यह ''स्वयं-जीवन'' स्वाभाविक रूप से हो, क्योंकि केवल परमेश्वर ही है जो एकलौता है और रचा नहीं गया है। वह पूर्ण रूप से जीवित परमेश्वर है और आत्मनिर्भर है। लेकिन परमेश्वर पिता ने पूरी अनन्तता को रचा और अपने में जीवन रखने के

विशेषाधिकार (अधिकार) को परमेश्वर पुत्र को दे दिया। यही पुत्र के संबन्ध में परमेश्वर का ''एकलौत'' होने का अर्थ यह है। यीशु मसीह ही एकलौत, रचा नहीं गया। एक्लौते का अर्थ है कि परमेश्वर पिता ने इस जीवन को जो उसमें स्वयं है परमेश्वर पुत्र को सृष्टि और समय की रचना से पहले अनन्तता में प्रदान किया। यह घटन अवतरण या यीशु के बपतिस्में के समय पर भी नहीं हुई। यह अनन्तता का एक कार्य था जो परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र के अद्‌भुत संबन्ध का एक भाग था, जो आरंभ से ही मौजूद था। *अनन्तता के क्रम में,* परमेश्वर पिता अपने में इस स्वयं-जीवन को परमेश्वर पुत्र को प्रदान करता है, और *लौकिक क्रम में,* परमेश्वर पुत्र इस जीवन को पृथ्वी पर लोगों पर प्रकट करता है। 1 यूहन्ना 1:2 में, परमेश्वर पुत्र को उस अनन्त जीवन के देहधारण के रूप में दर्शाया गया है, जो ''परमेश्वर पिता के साथ था और हमारे लिए प्रगट किया गया था।''

4. यीशु मसीह जीवन और ज्योती है।

यूहन्ना 1:4-9 में, यीशु मसीह को ''जीवन'' कहा गया है क्योंकि उसके पास परमेश्वर के गुण हैं, और उसे ''ज्योति'' कहा गया है क्योंकि वह परमेश्वर के गुणों को प्रत्यक्ष रुप से धारण करता है, प्रगट करता है। ''जीवन'' शब्दसिद्धान्त परमेश्वर के सार की पूर्णता के लिए प्रयोग किया गया है परमेश्वर के महीमावान गुणो के लिए, जैसा कि उसका सत्य, जो उसका ज्ञान, बुद्धिमत्ता और सत्यवादिता है, और उसकी सर्वसामर्थी ताकत के लिए भी, उसकी सर्वव्यपिता के लिए उसकी उपस्थिति जो सभी जगहों पर है, उसकी पवित्रता, उसका प्रेम, सभी बातों में उसकी सर्वोपरिता आदि के लिए है।

जब यह जीवन प्रकट होता है, तो इसे ''ज्योंति'' कहते है! इस प्रकार, यीशु मसीह अदृश्य परमेश्वर और उनकी शानदार विशेषताओं की दृश्य अभिव्यक्ति व प्रकाशन का प्रकटीकरण है। उदाहरण के लिए, हम केवल यीशु मसीह के माध्यम से अदृश्य परमेश्वर, उनके जीवन और उनके प्रेम को जान और अनुभव कर सकते हैं (यूहन्ना 5:21य 14:6य मत्ती 11:27)।

5. यीशु मसीह परमेश्वर पिता के साथ एक है।

यूहन्ना 5:17-23 में, यीशु ने अपने बारे में कुछ दावे किए। यहूदियों ने यीशु को गलत नहीं समझा, वरन उनके दावों को खारिज कर दिया।

(1) यीशु मसीह ने दावा किया कि *अलौकिक होने के कारण वह* परमेश्वर पिता के *तुल्य* हैं (यूहन्ना 5:17-18)।

यीशु ने परमेश्वर को अपना पिता कहा। यहूदियों ने तुरंत यह समझ लिया कि यीशु मसीह ने स्वयं को दिव्यता की समझ में सर्वोच्च ठ्हराया दिया है। उन्होंने समझा कि यीशु मसीह ने दावा किया है कि वह सभी तत्वों में परमेश्वर पिता के साथ समान था। यीशु मसीह का यह दावा या तो परमेश्वर की सबसे गहन निंदा थी, जिसे मौत की सजा होनी जानी चाहिए, या यह सबसे आनंद्मय सच्चाई थी, जिसे विश्वास से स्वीकार किया जाना चाहिए। परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र स्वभाव में एक ही हैं।

इसके अलावा, यीशु मसीह ने दावा किया कि वह कामों में भी परमेश्वर पिता की भांति ही था। परमेश्वर पिता की तरह, यीशु मसीह हमेशा कार्य में लगा हुआ है, ताकि बनाई गयी सृष्टी को संरक्षित रखे (इब्रानियों 1:3य कुलुस्सियों 1:17) और लोगों को पाप से बचाए (यशायाह 43:10-11य लूका 19:10य यूहन्ना 10:9)। यीशु मसीह का यह दावा प्रमुख कारण था कि यहूदी उसे क्यों मारना चाहते थे (यूहन्ना 10:28-31)।

(2) यीशु मसीह ने दावा किया कि *परमेश्वर के कार्यों के संबंध में वह* पिता परमेश्वर के *समान* है(यूहन्ना 5:19-22)।

वह कहता है, ''पुत्र स्वयं से कुछ नहीं कर सकता। वह केवल वही कर सकता है जो वह अपने पिता को करते देखता है, क्योंकि पिता जो कुछ भी करता है वह पुत्र भी करता है''। परमेश्वर पिता के साथ होने वाली गतिविधि परमेश्वर पुत्र में प्रकट होती है। पुत्र वही देखता है जो पिता उसे दिखाता है, और फिर अपने वचन और कर्म से वह लोगों के सामने पिता के मन को प्रकट करता है। पुत्र, पिता की इच्छा को मानता है और फिर उसे पृथ्वी पर लागू करता है। विशेष रूप से दो गतिविधियों: मृतकों को जीवन देना और न्याय करना पर जोर दिया जाता है।

यीशु मसीह का दावा है कि उसके पास परमेश्वर के समान अधिकार है आत्मिक रुप से मृत व्यक्तियों को अनन्त आत्मिक जीवन अभी वर्तमान समय में प्रदान करें, और भविष्य में पुनरुत्थान पर भौतिक रुप से मृत व्यक्तियों को अनाशमान भौतिक जीवन प्रदान करे। यीशु मसीह का यह भी दावा है कि परमेश्वर पिता ने परमेश्वर पुत्र को न्याय का सम्पूर्ण अधिकार दिया है ताकि परमेश्वर पुत्र को भी वैसा ही आदर प्राप्त हो जैसा कि परमेश्वर पिता को प्राप्त है!

(3) यीशु मसीह ने दावा किया कि *आदर के संबंध में वह* परमेश्वर पिता (यहुन्ना 5:23) के *समान* है

वह कहता है, ''कि सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे ही पुत्र का भी आदर करें। जो पुत्र का आदर नहीं करता, वह पिता का जिसने उसे भेजा है, आदर नहीं करता।'' अपने प्राण देने तक उसके प्रति आज्ञाकारी रहने का इनाम, यह है कि परमेश्वर पिता ने यीशु मसीह को वह नाम दिया जो सभी नामों से श्रेष्ठ है। यीशु मसीह का नाम समस्त रचित मानवजाति, प्रत्येक राजनीतिक अगुवे और हर एक धार्मिक भविष्यद्वक्ता के नाम से ऊपर रखा गया है! यीशु मसीह के नाम पर हर देश में हर घुटना झुकेगा और हर जुबान अंगीकार करेगी कि यीशु मसीह ही प्रभु है (फिलिप्पियों 2:9-11)। ऐसा ही आदर परमेश्वर पिता को दिया गया है (यशायाह 45:21-23)! इसलिए, जब यीशु मसीह को ऐसा आदर प्राप्त होता हैं, तो परमेश्वर की महिमा कम नहीं होती या परमेश्वर से अलग किसी और को दी जाती है। ऐसे कार्यो से परमेश्वर की महिमा बढ़ती है, क्योंकि यीशु मसीह ऐसे आदर को ''परमेश्वर पिता की महिमा के लिए'' प्राप्त करते हैं (फिलिप्पियों 2:11)। जब भी परमेश्वर पुत्र को उत्कृष्ट किया जाता है, परमेश्वर पिता और महिमामय हो जाते हैं। स्वर्ग के नीचे और कोई नाम नहीं दिया गया जिसके द्वारा मानवजाति को बचाया जा सके (प्रेरितों के काम 4:12)!

(4) यीशु मसीह ने दावा किया कि *दिव्य व्यक्तित्व में वो* और पिता एक हैं(यूहन्ना 10:30-33)।

वह कहता है, ''मैं और पिता एक हैं।'' यीशु मसीह इस तथ्य का उल्लेख नहीं करते हैं कि परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र *बाह्य* रूप से एक हैं, अर्थात, उन लक्ष्यों में जो उनके है व कार्यों में जो वे करते है, एक हैं। वह निश्चित रूप से इस तथ्य को संदर्भित करता है कि वे अपने आंतरिक परिपूर्णता में और प्रकृति में एक हैं। जब वह कहता है ''हम हैं'', तो वह दो व्यक्तियों की बात कर रहा होता है, अत: दिव्य स्वभाव में दो आंतरिक भेद। और जब वह ''एक'' कहता है, तो वह एक वास्तविकता (आत्मनिर्भरता), एक दिव्यता होने की बात कर रहा होता है। यीशु मसीह सिखाते हैं कि परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र दो व्यक्तित्व, परन्तु एक तत्व है। यद्यपि, बाइबल ''त्रिएक'' शब्द का उपयोग नहीं करती, लेकिन यह बहुत स्पष्ट रूप से त्रिएकता के सिद्धांत को सिखाती है। बाइबल का परमेश्वर स्वयं को अलग न किये जा सकने वाले *तीन व्यक्तित्व* (वास्तविकता, आत्मनिर्भरता, तत्व) *एक परमेश्वर* के रुप में प्रगट करता है।

स्वर्गीय दृष्टिकोण से, बाइबल के एक शाश्वत और जीवित परमेश्वर ने स्वयं को परमेश्वर के रूप में प्रकट किया, जिसके तीन आंतरिक भेद हैं:

- परमेश्वर पिता के रूप में वह स्वर्ग में है, पहुँच से बाहर की ज्योति, पृथ्वी पर मनुष्यों और रचित संसार से ऊँचा। (1 तीमुथियुस 6:15-16)।
- परमेश्वर के पुत्र के रूप में उसने मानव स्वभाव को धारण किया और अपनी सृष्टि और मानवीय इतिहास में प्रवेश किया। (फिलिप्पियों 2:5-11)
- और परमेश्वर पवित्र आत्मा के रूप में वह अब विश्वासियों के शरीरों और मसीही कलीसियाओं में वास करता है (1 कुरिन्थियों 6:19-20; इफिसियों 2:22)।

संसारिक दृष्टिकोण के अनुसार, मसीही एक दिव्य व्यक्तित्व की आराधना करते है जिसमें तीन आंतरिक भिन्नताएँ हैं:

- मसीही लोग परमेश्वर से पिता (रचियता) सम्बोधित करके प्रार्थना करते हैं (यशायाह 64:80, अपने परिवार का मुखिया (मत्ती 6:9; इफिसियों 3:14-15) और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए अपना जीवन व्यतीत करते हैं (रोमियों 11:36; 1कुरि. 10:31)।
- मसीही लोग परमेश्वर पुत्र (1तीमुथियुस 2:5) के माध्यम से पिता को जानते हैं। उनका न्याय, मेलमिलाप और छुटकारा परमेश्वर के पुत्र के द्वारा प्रश्चित के बलिदान के माध्यम से होता है (1तीमुथियुस 2:6; रोमियों 3:24-25; 5:9-10)।
- और मसीही लोग परमेश्वर पवित्र आत्मा के माध्यम से परमेश्वर की समानता मे सामर्थ के साथ मजबूत, शुद्ध व बदल जाते है (इफिसियों 3:16; 2 कुरिन्थियों 3:18)।

मत्ती 28:19, रोमियों 8:9-10 और इफिसियों 3:14-21 में परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और आत्मा के बीच एकता के बारे में और पढ़ें।

यूहन्ना 10:30 बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह परमेश्वर के अस्तित्व में एकता और तीन व्यक्तियों की भिन्नता को एक परमेश्वर में दोनो बातों को बनाये रखता है।

- यहुन्ना 10:30 ने साबेलियस (एक लीबियाई, तीसरी शताब्दी ए.डी. में) के अनुयायियों के झूठे सिद्धांत को खारिज कर दिया जिन्होंने परमेश्वर की एकता को बनाए रखा, परंतु परमेश्वर की त्रिएक्ता की विविधता से इनकार कर दिया। साबेलियस ने पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा को केवल *परमेश्वर के में तीन बाहरी रूप* वर्णित किया, जैसे सूरज, उसकी रोशनी और गर्माहट एक ही वास्तविकता की तीन अभिव्यक्तियाँ हैं।
- यहुन्ना 10:30 एरियस (एक लीबियाई, चौथी शताब्दी ए.डी में।) के अनुयायियों के झूठे सिद्धांत को भी अस्वीकार करता है, जिन्होंने परमेश्वर पुत्र को परमेश्वर पिता की अधीनता मे बनाए रखा, लेकिन उनकी एकता से इनकार किया।

यूहन्ना 10:31-33 में, यहूदियों ने यह अच्छी तरह से समझ लिया था कि यीशु मसीह ने परमेश्वर के साथ अपनी पूर्ण समानता की पुष्टि की है, क्योंकि उन्होंने फिर से उनके इस कथन को परमेश्वर की निन्दा के रुप में लिया।

इसलिए, यीशु मसीह ने यहूदियों (और अन्य धर्मों) को चेतावनी दी है, ''यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूँ तो अपने पापों में मरोगे'' (यूहन्ना 8:24)! यूहन्ना 8:24 में ''मैं हूं'' शब्द ठीक उसी तरह से प्रयोग किया गया है जैसे निर्गमन 3:14-15 में, जहां यहोवा ने अपना नाम प्रकट किया है: ''मैं जो हूँ सो हूँ''। लोगों को यह विश्वास दिलाना पर्याप्त नहीं है कि यीशु मसीह सिर्फ एक स्वर्गदूत, एक नबी या एक भला व्यक्ती था। जब तक लोग यह नहीं मानते कि यीशु मसीह वह सब कुछ है जो उन्होंने दावा किया था, तो वे निश्चित रूप से अपने पापों में मर जाएंगे! अर्थात, वे निश्चित रूप से स्वर्ग में नहीं प्रवेश कर पाएंगे, वरन नरक में डाल दिये जाएंगे! यह विश्वास करना आवश्यक है कि यीशु मसीह परम पिता परमेश्वर के समान है, कि वह अदृश्य परमेश्वर की दृश्य छवि है, वरन ''मैं जो हूँ सो हूँ'' का दृश्य प्रकाशन है जैसा कि निर्गमन 3:14-15 में लिखा है !

6. यीशु मसीह के दो स्वभाव हैं: वह सत्य परमेश्वर और सत्य मनुष्य हैं।

यूहन्ना 14:28-29 में, यीशु मसीह कहते हैं, ''यदि तुम मुझसे प्रेम रखते, तो तुम आनंदित होते कि मैं पिता के पास जाता हूँ, क्योंकि *पिता मुझसे से बड़ा है।* मैंने तुम्हे ऐसा होने से पहले अभी बता दिया है, ताकि जब ऐसा होता है तो तुम विश्वास करो''। जब इस पद की व्याख्या को बाकी बाइबल से अलग संसारिक रूप से समझा जाता है, तो कुछ लोग यह निष्कर्ष निकालते हैं (बिना किसी न्याय के) कि यीशु परमेश्वर नहीं है या सर्वशक्तिमान परमेश्वर के साथ नहीं है। उनका यह निष्कर्ष गलत है, क्योंकि जब इस पद की व्याख्या यहुन्ना रचित सुसमाचार के संदर्भ में की जाती है, तो यह स्पष्ट होता है कि यीशु मसीह *यहां अपने ईश्वरीय स्वभाव का नहीं, वरन अपने मानवीय स्वभाव का उल्लेख कर रहे हैं।*

परमेश्वर पिता किस रूप में मसीह से ''बड़ा'' है? यहुन्ना 10:30 के अनुसार, परमेश्वर के एकलौते पुत्र के रूप में, यीशु अपने अलौकिक रूप के साथ पूरी तरह से पिता के तुल्य है। फिलिप्पियों 2:6, कुलुस्सियों 2:9 और इब्रानियों 1:3 में भी इसका वर्णन है। परन्तु यूहन्ना 14:28 के अनुसार, *परमेश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ के रूप में, वह स्वयं एक मनुष्य है और इसलिए मनुष्य के रुप में वह पिता से कम है।*

परमेश्वर का दिव्य स्वभाव यीशु मसीह के मानवीय स्वभाव से कहीं अधिक बड़ा है! यूहन्ना 10:29, 1कुरिन्थियों 15:28 और फिलिप्पियों 2:7-8 में भी यही शिक्षा है।

यीशु मसीह के दो स्वभाव हैं: परमेश्वर के रूप में वह परमेश्वर पिता के समान है और मनुष्य के रूप में वह परमेश्वर पिता से छोटा है। पर क्योंकि यीशु मसीह के दो स्वभावो को कभी अलग नहीं किया जा सकता और क्योंकि वह कभी भी परमपिता और परमेश्वर आत्मा से अलग नहीं होते हैं, इसलिए मसीहियों को यीशु मसीह को ''अदृश्य सर्वशक्तिमान परमेशवर के साक्षात दर्शन'' के रूप में देखना चाहिए।
पुराने नियम में व नए नियम में स्पष्ट शिक्षा यह है कि यीशु मसीह ''अदृश्य सर्वशक्तिमान परमेश्वर की दृश्य अभिव्यक्ति है'' (इब्रानी: एल शादाई का अर्थ सर्वशक्तिमान है)। यशायाह 10:20-23 में यहोवा को (इब्रानी: यहोवा), इस्राएल का पवित्र, ''सर्वशक्तिशाली परमेश्वर'' (इब्रानी: एल गिबोर) वरन ''सर्वोपरी परमेश्वर'' (इब्रानी: सीबओथ, सेनाओ का यहोवा) कहा जाता है। यशायाह 9:6 में, यीशु मसीह को ''सामर्थी परमेश्वर'' (इब्रानी: एल जिबोर) कहा गया है और प्रकाशित्वाक्य 1:8 में उन्हें ''सर्वशक्तिमान'' कहा गया है (पुराने नियम के युनानी अनुवाद में ''पैंटोक्रैटोर'' शब्द है जिसका इब्रानी अनुवाद ''एल त्सिबॉथ'' और ''एल शादाई'' है)!

प्रकाशितवाक्य 1:8 में लिखा है, ''मैं ही अल्फा और ओमेगा हूँ, (आदि और अंत) जो था, जो है और जो आने वाला है।'' (प्रकाशितवाक्य 1:7,12) यह साबित करता है कि प्रकाशितवाक्य 1:8 में यीशु मसीह स्वयं बोल रहा है और उसका यह दावा, अर्थात, कि वह और पिता एक हैं, सत्य है और यह कि यीशु मसीह समस्त मानवजाति के लिये परमेश्वर का पूर्ण, और शाश्वत प्रकाशन है (कुलुस्सियों 1:15य इब्रानियों 1:3)।

इसलिए, किसी को (अन्य धर्मों सहित) यीशु मसीह को परमेश्वर पिता से कम जानकर अपमानित न करने दें। यूहन्ना 5:23 सिखाता है कि सभी लोगों को परमेश्वर पुत्र का वैसा ही आदर करना चाहिए जैसे वे परमेश्वर पिता का करते हैं। जो कोई पुत्र का आदर नहीं करता है वह पिता का आदर भी नहीं करता"!

ड. यहुन्ना रचित सुसमाचार के व्यावहारिक संदेश

यूहन्ना रचित सुसमाचार में सीखने के लिए कई व्यावहारिक सबक हैं। इस पाठ में हम केवल सुसमाचार, सुसमाचार प्रचार और परमेश्वर के लिए एकमात्र मार्ग के विषय में व्यावहारिक पाठों को सूचीबद्ध करेंगे। सुसमाचार के संदेश में पाँच सत्य हैं: परमेश्वर के बारे में सच्चाई, मनुष्य के बारे में सच्चाई, यीशु मसीह के बारे में सच्चाई, उद्धार के बारे में सच्चाई और मसीह में नए जीवन के बारे में सच्चाई।

1. परमेश्वर के बारे में सच्चाई।

यूहन्ना 1:1,14,18 सिखाता है कि परमेश्वर पिता स्वयं को परमेश्वर पुत्र में प्रकट करता है। 1 यूहन्ना 1:5 सिखाता है कि परमेश्वर ज्योती है और यूहन्ना 3:19 सिखाता है कि ज्योती संसार में आई है। यूहन्ना 4:23-24 सिखाता है कि परमेश्वर आत्मा है और उसके उपासकों को आत्मा और सच्चाई में आराधना करनी चाहिए। यूहन्ना 3:16 और 1 यूहन्ना 4:8-9 सिखाते हैं कि परमेश्वर प्रेम है और परमेश्वर ने यह प्रेम अपने

एकलौते पुत्र को संसार में भेजकर प्रगट किया है कि हम उसके माध्यम से अनन्त जीवन पा सकें। यूहन्ना 6:35-46 यह सिखाता है कि परमपिता परमेश्वर लोगों को प्रभु यीशु के पास एक संप्रभु तरीके से भेजता है और उन्हें अप्रतिष्ठित रूप से यीशु मसीह का अनुभव कर सकें।

2. मनुष्य के बारे में सच्चाई।

यूहन्ना 1:10-11 सिखाता है कि संसार ने यीशु मसीह को स्वीकार नहीं किया। यूहन्ना 3:3-8 सिखाता है कि प्राकृतिक मनुष्य भटक जाता है और परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। मनुष्य को बचने के लिए पुन: जन्म लेना होगा। यूहन्ना 3:16-18,36 सिखाता है कि सभी अविश्वासी भटक गए हैं। *वे पहले से ही निंदित खड़े हैं और परमेश्वर के प्रकोप के साये में हैं* (जब तक वे पश्चाताप नहीं करते)। मनुष्य को बचने के लिए यीशु मसीह पर विश्वास करना होगा। यूहन्ना 8:21-24 सिखाता है कि जो विश्वास नहीं करेगा, वह केवल मृत्यु को देखेगा। यूहन्ना 9:39-41 सिखाता है कि जो कोई भी अपने पाप से अंगीकार नही करेगा, वह आध्यात्मिक रूप से अंधा वरन भटक जायेगा।

3. यीशु मसीह के बारे में सच्चाई।

यूहन्ना 1:29 सिखाता है कि यीशु मसीह "परमेश्वर का मेमना है जो संसार के पाप को उठा ले जाता है"। यूहन्ना 3:14-15 और यूहन्ना 12:23-24 सिखाते हैं कि यीशु मसीह को क्रूस पर अपनी जान देनी होगी। उसके पापों के बलिदान के बिना, किसी भी मनुष्य को बचाया नहीं जा सकता है। यूहन्ना 14:6 सिखाता है कि यीशु मसीह ही पिता के पास जाने का एकमात्र मार्ग है, परमेश्वर का एकमात्र प्रकाशन (सत्य) जो अनन्त जीवन देने वाला है। यूहन्ना 10:7-10 सिखाता है कि यीशु मसीह ही एकमात्र द्वार है और जो भी उसके द्वारा प्रवेश करेगा, वह बच जाएगा।

4. उद्धार के बारे में सच्चाई।

यूहन्ना 1:12 सिखाता है कि यीशु मसीह हमें परमेश्वर की संतान (उनका पद) होने का गौरव देगा वरन उन सबको जो यीशु मसीह में विश्वास करते हैं सभी लोगों के समक्ष अपनी संतान होने का अधिकार देगा (उनकी प्रक्रिया)(उसे ग्रहण करके)(प्रकाशितवाक्य 3:20)। यूहन्ना 3:16-18 सिखाता है कि जो कोई भी यीशु मसीह पर विश्वास करता है, उन पर अब दण्ड की आज्ञा नहीं है (रोमियों 8:1), वरन उसको अनंत जीवन मिलता है और इस कारण वह सदैव बचा रहेगा (फिलिप्पियों 1:6)। यूहन्ना 6:40 सिखाता है कि हर कोई जो यीशु मसीह को देखकर विश्वास करता है उसको ही अनन्त जीवन प्राप्त होगा । यूहन्ना 8:51 सिखाता है कि जो कोई भी यीशु मसीह के वचनो का पालन करता है, वह कभी भी अनन्त मृत्यु (अर्थात नरक) नहीं देखेगा। यूहन्ना 12:37-46 सिखाता है कि परमेश्वर प्रत्येक मनुष्य को उसके विश्वास या उसके अविश्वास के लिए जिम्मेदार ठहरायेगा।

5. मसीह में नए जीवन के बारे में सच्चाई।

यूहन्ना 5:24 यह सिखाता है कि जो कोई भी बाइबल के संदेश को सुनता है और मानता है, उसके पास अनन्त जीवन है, और वह कभी भी त्यागा नहीं जायेगा और उसने अनन्त मृत्यु को पहले ही पार कर चुका है। यूहन्ना 10:26-29 यह सिखाता है कि जो कोई भी यीशु मसीह पर विश्वास करता है वह कभी नष्ट नहीं होगा और कोई भी उन्हें मसीह के पास से दूर नही कर सकता। कोई भी और कुछ भी परमेश्वर के हाथ से उसके झुंड को छीन नहीं सकता। यूहन्ना 10:27-28, यीशु मसीह के अनुयायियों के लिए उद्धार का आश्वासन देता है। यूहन्ना 15:1-17 सिखाता है कि यीशु मसीह में नया जीवन उसके साथ एक निरन्तर व्यक्तिगत संबंधों से कायम रह सकता है, ताकि मसीह में बहुतायत से फल लायें और परमेश्वर को महिमा मिलें। यूहन्ना 11:25-26, यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर विश्वासियों के लिए मृतकों में से जी उठने का आश्वासन देता है।

6. प्रचार।

यूहन्ना 1:39, 43,46 सिखाता है कि हमें लोगों को "आने और देखने" के लिए आमंत्रित करना चाहिए कि यीशु मसीह ईसाइयों कौन हैं ताकि वे उसका अनुसरण कर सके। यहुन्ना 4 सिखाता है कि हमें लोगों को कभी भी मजबूर नहीं करना चाहिए, वरन उन्हें प्रेम से जीतना चाहिए। और यूहन्ना 4:35-38 यह सिखाता है कि परमेश्वर को विभिन्न प्रचारकों की आवश्यकता है: जो सुसमाचार का बीज बोते हैं और फसल काटते हैं। यहुन्ना 9 सिखाता है कि आपको सम्पूर्ण मनुष्य के साथ साथ, उसके शरीर व आत्मा को भी जीतना होगा।

7. परमेश्वर के लिए एकमात्र मार्ग।

बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि:

यीशु मसीह ही परमेश्वर पिता तक पहुंचने के लिए एकमात्र मार्ग है!

- जो यीशु मसीह को *ग्रहण* करता है वह परमेश्वर को ग्रहण करता है (मत्ती 10:40)।
- वह जो यीशु मसीह को *अस्वीकार* करता है वह पिता को अस्वीकार करता है (लूका 10:16)।
- वह जो यीशु मसीह का *आदर* करता है वह परमेश्वर का आदर करता है (यूहन्ना 5:23 ए)।
- वह जो यीशु मसीह का आदर नहीं करता वह परमेश्वर का आदर नहीं करता (यूहन्ना 5:23 ब)।
- केवल वह *जिसे* परमेश्वर *यीशु मसीह को देता है*, वह यीशु मसीह के पास आता है और वह उसे कभी भी नहीं निकालेगा (यूहन्ना 6:37,44)।
- वह जो यीशु मसीह को *जानता है* वह परमेश्वर को जानता है (यूहन्ना 8:19)।
- वह जो यीशु मसीह से *प्रेम* करता है वह परमेश्वर से प्रेम करता है (यूहन्ना 8:42)।
- वह जो यीशु मसीह पर *विश्वास* करता है वह परमेश्वर पर विश्वास करता है (यूहन्ना 12:44)।
- वह जो *यीशु मसीह के शब्दों को सुनता है* वह परमेश्वर के शब्दों को सुनता है (यूहन्ना 12:47-50)।
- जो यीशु मसीह को *स्वीकार* करता है वह परमेश्वर को स्वीकार करता है (यूहन्ना 13:20)।

- वह जिसने यीशु मसीह को *देखा* है उसने परमेश्वर को देखा है (यूहन्ना 14:9-10)।
- वह जो यीशु मसीह की आज्ञाओं और शिक्षाओं का *पालन* करता है, परमेश्वर उससे प्रेम रखेगा और उसके साथ अपना घर बनाएगा (यूहन्ना 14:21,23)।
- यीशु मसीह अनंत जीवन देते है, परमेश्वर को प्रकट करते है और उन लोगों के लिये प्रार्थना करते है *जो यीशु मसीह को दिये गये* (यूहन्ना 17:2,6,9)।
- जो यीशु मसीह को *स्वीकार* करता है वह परमेश्वर को स्वीकार करता है (1यूहन्ना 2:23 ए)।
- वह जो यीशु मसीह का *इंकार* करता है वह परमेश्वर को इंकार करता है (1यूहन्ना 2:23 ब)।
- वह जो यीशु मसीह को *स्वीकार* करता है, परमेश्वर उसमें रहता है और वह परमेश्वर में(1यूहन्ना 4:15)।
- वह जो यीशु मसीह से *प्रेम* करता है वह परमेश्वर से प्रेम करता है (1यूहन्ना 5:1)।
- वह जो *यीशु मसीह के शिक्षाओं में नहीं चलता* उसके पास परमेश्वर नहीं है (2यूहन्ना 9)।

च. यूहन्ना रचित सुसमाचार की प्रासंगिक्ता

यूहन्ना रचित सुसमाचार, वर्तमान में रहने वाले लोगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है। यह विशेष रूप से समझाता है कि यीशु मसीह कौन है, उसने क्या किया है और लोग कैसे यीशु मसीह के साथ व्यक्तिगत संबंध में आ सकते हैं। यह पवित्र आत्मा का काम सिखाता है और एक मसीही को कैसे रहना चाहिए, वह भी। यह प्रचार के लिए कई अच्छे सिद्धान्त भी सिखाता है।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *[मध्यस्थता]* **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन लोगों के समूह में लगातार प्रार्थना करें। एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें(रोमियों 15:30; कुलु. 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट) *[निर्धारित कार्य]* **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. **समर्पण:** चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. यूहन्ना 14 के बाइबल अध्ययन के आधार पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ **प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।**

3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। उत्पत्ति 22,24,27 और 28** के आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. **याद करें.** नयी नयी बाइबल पदों को याद करें व उन पर मनन करें। **(1) राज्य में प्रवेश करें। यूहन्ना 3:3,5।**
   रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।
5. **प्रार्थना.** इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है।(भजन संहिता 5:3)
6. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में **अपने लेखे का अद्यपन करें**। जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

बढ़ोतरी की ओर अग्रसर रहें

आप डोटा चर्च बिल्डिंग पाठ्यक्रम के अंत में आ गए हैं।

1. शान्त समय।

यीशु मसीह (शांत समय) के साथ व्यद्रिगत संगति का नियमित समय जारी रखें। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें (मैनुअल 1 देखें, पूरक 1)। बाइबल पढ़ने के कार्यक्रम का उपयोग करना का एक अच्छा माधयम है (मैनुअल 1, पूरक 2 देखें)। शांत समय के नोट्स बनाना जारी रखें।

2. याद करना।

बाइबल अध्ययन से खुद के लिये नई बाइबल पदों का चयन करना जारी रखें। नियमित रूप से महत्वपूर्ण बाइबल पद याद रखें (मैनुअल 1, पूरक 5 देखें)। और प्रतिदिन आखिरी 5 याद करे गए बाइबल पदों की समीक्षा करना जारी रखें।

3. बाइबल अध्ययन।

बाइबल अध्ययन करना जारी रखें। अपनी स्वयं की बाइबल पुस्तक का चयन करें और पुस्तक को पढ़ने हेतु बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का उपयोग करें (देखें मैनुअल 1, पूरक 4)। पुराने नियम की कुछ पुस्तकों का अध्ययन करने से पहले आपको नए नियम में सबसे महत्वपूर्ण पुस्तकों का अध्ययन करना उचित है, क्योंकि पुराने नियम की व्याख्या नए नियम के प्रकाशन में की जानी चाहिए। www.dota.net रेडियो कार्यक्रमों में बाइबल की पुस्तकों का परिचय देखें।

डोटा किंग्डम प्रीचिंग पाठ्यक्रम को जारी रख सकते हैं। www.dota.net मैनुअल 9–12 देखें, परमेश्वर के राज्य के स्वभाव के बारे में जानना, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना और परमेश्वर के राज्य में रहना। इन नियमावली में यीशु मसीह द्वारा परमेश्वर के राज्य के लगभग सभी ख्रष्टांतों के बारे में बताया गया है।

4. प्रार्थना।

हर सप्ताह किसी न किसी व्यद्रि के लिए प्रार्थना करना जारी रखें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन. 5:3)।

5. मसीही संगति।

मण्डली में अन्य विश्वासियों के साथ संगति जारी रखें (या तो एक घरेलू समूह या बड़ी मण्डली की बैठक में)।

6. फल लाना।

अधिक व स्थायी फल देना जारी रखें (यूहन्ना 15:5,8,16)। यीशु मसीह का गवाह बनें (मत्ती 10:32; 1पतरस 3:15-16)। सुसमाचार को विभिन्न तरीकों से फैलाएँ। अपने आसपास के लोगों को यीशु मसीह के करीब आने हेतू प्रभावित करने का खद़ संकल्प लें।

7. शिष्यत्व।

यीशु मसीह के पीछे चलना जारी रखें, उनसे सीखें और उनकी बातों का पालन करें (मत्ती 7:24-27)।

नए समूह बनायें

जब भी आपने विश्वासियों के समूह का प्रशिक्षण पूरा किया हो, तो यह दो कार्य अवश्य करें:

1. दूसरों को नए समूह शुरू करने दें।

अपने पहले शिष्यत्व समूह के सदस्यों को चुनौती दें कि वे अपना स्वयं का शिष्यत्व समूह शुरू करें। उन्हें डोटा सामग्री का उपयोग करने दें। उन्हें प्रशिक्षित करना और प्रोत्साहित करना जारी रखें।

2. एक नया समूह स्वयं शुरू करें।

प्रार्थनापूर्वक युवा विश्वासियों के एक नए समूह का चयन करने पर विचार करें और उन्हें मसीह का चेला बनाएँ। उन्हें प्रशिक्षित करने के लिए पूर्ण पाठडक्रम या इस पाठडक्रम का एक हिस्सा उपयोग करें। डोटा पाठ में निम्नलिखित तीन भाग होते हैं:

शिष्य बनाना	1 से 4 में 48 अध्ययन।
मसीही की मण्ड्ली बनाना	चर्च मैनुअल में 5 से 8 तक 48 अध्ययन।
राज्य का प्रचार करना।	राज्य नियमावली 9 से 12 में 48 अध्ययन।